Volume-II, No. 1, Feb -2015, pp. 102-106

गंगा–रामगंगा दोआव में बढ़ती जनसंख्या घटता जोताकार
(जनपद बिजनौर के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन)

श्रीमती संगीता रानी, शोध छात्रा, भूगोल
डॉ. ए.के. एस. राणा एसोशिएट प्रोफेसर भूगोल विभाग,
वर्धमान कालेज, बिजनौर उ. प्र. भारत

सारांश–जनसंख्या वृद्धि विकासशील देशों के समक्ष एक ज्वलन्त विषय एवं चुनौती है। इन देशों में रोजगार के सीमित साधनों के कारण कृषि पर निर्भरता बढ़ती जा रही है। कृषि पर जनसंख्या का दबाव बढ़ने से मिट्टी, जल एवं उत्पादन की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। कृषि भूमि सीमित होने के कारण वन, तालाब, नदी आदि की भूमि तो कम हो ही रही है साथ ही कृषि जोताकार भी घटता जा रहा है, जिससे बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समस्याएँ आयेंगी। घटते जोताकार का प्रभाव सामाजिक–संरचना पर भी पड़ रहा है। जीवन मूल्यों में गिरावट तथा गाँवों से जनसंख्या का नगरों की ओर पलायन एवं नगरों में समस्याओं का अंबार भी इसी कारण है। जनसंख्या वृद्धि को शिक्षा के प्रचार–प्रसार द्वारा कम करना होगा तथा सामूहिक परिवारों के साथ सहकारी कृषि के विकास पर जोर देना होगा। इसके अतिरिक्त नगरीय क्षेत्रों का परिसीमन कर अवैध रूप से नगरों के गाँवों में घुसने की प्रवृत्ति पर भी अंकुश लगाना होगा। कृषि के अतिरिक्त रोजगार के अन्य साधनों का विकास भी प्राथमिकता के साथ करना होगा।

कृषि हमारे लिए केवल जीविकोपार्जन का साधन या व्यवसाय नहीं है, अपितु प्रत्येक भारतीय के लिए यह एक जीवन पद्धति है, जो हमारे संस्कार में रची बसी है। कृषि जनसंख्या की बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ–साथ सकल घरेलू उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है और रोजगार का मुख्य साधन भी है। कई महत्वपूर्ण उद्योग कृषि उत्पाद पर ही प्रत्यक्ष रूप से निर्भर है। इनमें वस्त्र उद्योग, चीनी उद्योग, तेलघानी, दाल प्रसोधन, आटा व चावल मिलें, डेयरी उत्पाद, बेकरी, चिप्स एवं स्नैक्स, खाद्य एवं फल प्रसंस्करण, सगन्ध तेल उद्योग आदि मुख्य हैं। भारतीय संदर्भ में देखें तो यहाँ की 1.25 अरब जनसंख्या में लगभग 2/3 जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न है और यहाँ के कृषक स्वेच्छा से फसलोत्पादन करने एवं तकनीकी के प्रयोग करने को स्वतन्त्र हैं। 1970 के दशक में प्रारम्भ हरित क्रान्ति ने भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन 1995–96 तक आते–आते इसके दुष्परिणाम भी परिलक्षित होने लगे हैं। जनसंख्या वृद्धि ने गहन कृषि पद्धति को बढ़ावा दिया है इससे जनसंख्या की खाद्यान्न सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति तो हुई लेकिन मृदा के ऊपर अनावश्यक दबाव भी बढ़ा जिससे उत्पादन तो कम हुआ ही साथ ही उत्पादन देने वाली जोतों का आकार भी परिवर्तित हुआ। जोताकार में परिवर्तन जनसंख्या दबाव का सूचक है। प्रस्तुत शोध पत्र इसी पर आधारित है।

अध्ययन क्षेत्र– जनपद बिजनौर गंगा–रामगंगा दोआव में स्थित मुरादाबाद मण्डल का भाग है जिसका अक्षांशीय विस्तार 29^0 $2^{'}$ उत्तर से 29^0 $19^{'}$ उत्तर तथा देशान्तरीय विस्तार 77^0 $59^{'}$ पूरब से 78^0 $59^{'}$ पूरब तक है। यहाँ का कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 4711 वर्ग किमी0 है। जनपद का अधिकांश भाग मैदानी है जो गंगा की ऊपरी घाटी अर्थात रूहेलखण्ड मैदान का ही भाग है। भू–आकृतिक स्वरूप की दृष्टि से काजी एम0बी0 पीठाबाला, स्टाम्प एवं स्पेट ने जनपद को गंगा की ऊपरी घाटी में सम्मिलित किया है। इसके उत्तर में रामगंगा व दक्षिण में गंगा नदी प्रवाहित होती है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी जनपद का गौरवशाली इतिहास रहा है। जनपद को ***महात्मा विदुर, ऋषि कण्व, शकुन्तला नन्दन परम–प्रतापी सम्राट भरत तथा वर्तमान में ब्रिटिश भारत के प्रथम इंजीनियर राजा ज्वाला प्रसाद, हिन्दी गजलकार दुष्यन्त त्यागी, कुरतुल–ऐन–हैदर, निश्तर खानकाही की भूमि होने का गौरव प्राप्त है।*** प्रशासनिक दृष्टि से जनपद में 5 तहसील, 11 विकास खण्ड तथा 959 ग्राम सभाएँ है।

अध्ययन का उद्देश्य– प्रस्तुत शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य गंगा–रामगंगा दो आव में बढ़ती जनसंख्या एवं घटता जोताकार (जनपद बिजनौर के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन) को विश्लेषित करना है। जनपद बिजनौर गंगा–रामगंगा नदियों के मध्य में उन्नत कृषि भूमि वाला क्षेत्र है। यहाँ की 73 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है। 2011 की जनगणना के अनुसार क्षेत्र की जनसंख्या 3682910 व्यक्ति है तथा कुल जोतों की संख्या 317311 है। जनपद में रोजगार के अन्य साधन सीमित होने के कारण कृषि कार्य को प्राथमिकता दी जाती है। जनसंख्या वृद्धि के कारण पारिवारिक विघटन एवं एकाकी परिवारों के अस्तित्व में आने से कृषि जोतों

की संख्या में निरन्तर वृद्धि एवं आकार में कमी आती जा रही है। जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप न केवल जोताकार के स्वरूप में परिवर्तन हो रहा है अपितु शस्य प्रतिरूप को न अपनाना, वन क्षेत्र में कमी, नदी बेसिन क्षेत्रों में कृषि, जल संसाधनों में ह्रास एवं गुणवत्ता में कमी, उर्वरकों एवं कीटनाशकों का बढ़ता प्रयोग आदि जनसंख्या दबाव के सूचक हैं। इसलिए जनसंख्या वृद्धि के प्रभाव को कृषि जोताकार के संदर्भ में स्पष्ट करना ही शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

परिकल्पना– प्रस्तुत अध्ययन ***'बढ़ती जनसंख्या घटता जोताकार'*** एक ज्वलंत विषय है। वर्तमान में यह विकासशील देशों की प्रमुख समस्या है जिस पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक विचार–विमर्श, गोष्ठी एवं सेमिनार आयोजित किये गये हैं। यह स्पष्ट है कि जनसंख्या में वृद्धि होने से मांग में वृद्धि होती है और माँग का प्रभाव प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ाता है। इस दबाव से संसाधनों की गुणवत्ता में कमी आती है। कृषि चूंकि सीमित संसाधन है इसलिए भार या दबाव बढ़ने से जोताकार छोटा हो जाता है। इन्हीं तथ्यों पर यह शोध पत्र आधारित है।

विधितन्त्र– शोध कार्य को पूर्ण करने में प्राथमिक एवं द्वितीयक, दोनों ही प्रकार के आँकड़ों का सहारा लिया गया है। धरातलीय पत्रक, गजेटियर, पत्र–पत्रिकाएँ तथा विभिन्न विभागों की वार्षिक आख्याएँ, सांख्यिकीय पत्रिका, जनगणना आदि का सहारा लिया गया है। साथ ही विभिन्न मूर्धन्य विद्वानों के प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध पत्रों तथा शोध कार्यों को भी अध्ययन में यथा स्थान प्रयोग किया गया है। सांख्यिकी विधियों का भी प्रयोग करके निष्कर्ष निकालने का प्रयत्न किया गया है।

जनसंख्या विकास– जनपद बिजनौर में जनसंख्या विकास की प्रवृत्ति पर दृष्टिपात करें तो स्पष्ट होता है कि यहाँ की जनसंख्या में अनायास ही परिवर्तन नहीं आये अपितु यह कृमिक गति से बढ़ते हुए वर्तमान स्वरूप तक पहुँची है। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व के दशकों में जनसंख्या अपेक्षाकृत कम थी जो स्वतन्त्रता प्राप्ति विशेषतः 1981 के पश्चात् तीव्र गति से बढ़ी है जबकि जनपद के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में कमी आयी है, क्योंकि इस समय तक जनपद का विस्तार हरिद्वार की चण्डी पहाड़ियों तक था। सहारनपुर जनपद के गठन के समय यह क्षेत्र जनपद बिजनौर की नजीबाबाद तहसील में स्थित था। यह क्षेत्र अलग हो जाने से जनपद के भौगोलिक क्षेत्र में कमी आई। जनसंख्या वृद्धि ने जनसंख्या घनत्व में भी वृद्धि की तथा कृषि संसाधनों पर दबाव बढ़ाया। जनसंख्या विकास की प्रवृत्ति ने न केवल क्षेत्रीय कृषि संसाधनों पर दबाव बढ़ाया हैं, अपितु क्षेत्रीय पारिस्थितिकी में भी परिवर्तन किया है। जनपद के जनसंख्या विकास को तालिका–1.0 में देखा जा सकता हैं –

तालिका संख्या–1

जनपद बिजनौर में जनसंख्या का दशकीय विकास, वृद्धि एवं कुल परिवर्तन

वर्ष	जनसंख्या			प्रतिदशक में अन्तर		
	कुल जनसंख्या	ग्रामीण जनसंख्या	नगरीय जनसंख्या	कुल	ग्रामीण	नगरीय
1901	780105	610388	169717	–	–	–
1911	806089	643029	163060	+3.33	+6.98	−3.92
1921	740368	589151	151217	−8.15	−8.37	−7.26
1931	835469	646827	188642	+12.84	+9.78	+24.74
1941	910223	701427	208796	+8.94	+8.44	+10.68
1951	984196	747535	236661	+8.12	+6.57	+13.34
1961	1190987	995079	195908	+21.01	+33.11	−17.21
1971	1490185	1220483	269702	+25.12	+22.65	+37.67
1981	1924487	1444533	479954	+29.14	+18.35	+77.95
1991	2454521	1839168	615352	+27.54	+27.31	+28.21
2001	3131619	2370268	761351	+27.58	+28.87	+23.72
2011	3682910	2757568	925312	+17.64	+16.34	+21.53
कुल परिवर्तन						
1901 से 2011 तक	2902805	2147180	755595	372.10	351.77	445.20

5.कृषि जोताकार– जोताकार का कृषि उत्पादन एवं क्षेत्रीय विकास में अहम स्थान है। बड़ी जोताकार जहाँ जनसंख्या न्यूवता को इंगित करती है तो वही छोटी जोताकार जनसंख्या अधिकता एवं दबाव का सूचक है। कृषि, अर्थव्यवस्था का एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें रोजगार की असीम सम्भावनाएँ तो है ही साथ ही एक सीमा तक

दबाव सहने की सामर्थ्य भी है। बेरोजगारों को जब द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध नहीं हो पाता है तो वे प्राथमिक क्षेत्र विशेषतः कृषि में ही स्वयं को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जोड़ लेते है। कृषि से जुड़ने के पश्चात वह भूमि के छोटे से छोटे टुकड़े से भी अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। इसके लिए उन्हें चाहे किसी भी सीमा तक क्यों न जाना पड़े। क्षेत्रीय बेरोजगार संसाधन विहीन तो है ही उसके पास अपने साधन इतने नहीं होते कि उनका प्रयोग करके कृषि से अधिक उत्पादन प्राप्त कर सके। इसके लिए वह महाजन से कर्ज लेकर कृषि में नूतन प्रयोग कर अपने सपने साकार करने का प्रयत्न करता है, किन्तु भारतीय कृषि चूंकि बहुत सी समस्याओं से ग्रस्त है परिणामतः बेरोजगार और गरीब हो रहे है। लेकिन अन्य विकल्पों के अभाव के कारण और अगले वर्ष अच्छी फसल की चाह में वे कृषि से जुड़े हुए है। जब अधिकाधिक जनसंख्या कृषि कार्यों से जुड़ती है तो कृषि पर अनावश्यक दबाव बढ़ता जाता है। अधिकाधिक उत्पादन की चाह में अधिक से अधिक उर्वरक, कीटनाशक एवं खरपतवार, नाशकों तथा संकर प्रजातियों के प्रयोग से कृषि गहनता भी बढ़ती चली जाती है। इन क्रियाओं से न केवल भूमि की उर्वरा शक्ति घटने लगती है। अपितु अन्य समस्याएँ यथा–प्रदूषण, भूमिगत जल स्तर में कमी, परितन्त्र में खाद्य श्रृंखला तथा पादप प्रजाति विलोपन आदि भी उत्पन्न होने लगती है।

अध्ययन क्षेत्र जनपद बिजनौर में जनसंख्या वृद्धि के कारण लोगों को मजबूरन कृषि कार्य में जीविका खोजने की प्रवृत्ति विगत कई वर्षों में बढ़ी है। बेरोजगार पीढ़ी रोजगार हीनता की स्थिति में अपनी पैतृक कृषि योग्य भूमि का बंटवारा करके कृषि कार्य पर जीवन निर्वाह करने को विवश हो रही है जिससे क्रियाशील जोतों का आकार प्रतिवर्ष छोटा होता जा रहा है। इसके अतिरिक्त आवास एवं अन्य अद्यःसंरचनात्मक सुविधाओं आदि हेतु भी कृषि योग्य भूमि ही कम हो रही है। जनपद बिजनौर में कृषि पर जनसंख्या के दवाब को जोतों के आकार के माध्यम से स्पष्ट समझा जा सकता है। कृषि जोत क्षेत्रीय कृषि विकास एवं उत्पादन पर प्रभाव डालने वाला महत्वपूर्ण कारक है। जनपद बिजनौर में 1996 एवं 2011 में क्रियाशील जोतों के आकार का विश्लेषण करें तो सहज ही स्पष्ट होता है कि बेरोजगारों के पास कृषि योग्य भूमि के टुकड़े करने के अतिरिक्त रोजगार का अन्य कोई विकल्प ही नहीं है। बिजनौर में अधिकांश जोताकार 0.5 हेक्टेयर से कम है। जोताकार का घटना एवं संख्या का बढ़ना केवल ग्रामीण अंचलों में ही नहीं है अपितु नगरों में भी इसमें वृद्धि हो रही है। जोताकार बड़े होने अर्थात 2 हेक्टेयर से अधिक होने पर कृषक तकनीकी साधनों का अधिकाधिक प्रयोग कर उत्पादन में वृद्धि कर सकता है। बड़े खेत में ट्रेक्टर, कम्पाइन, ट्रिलर आदि का प्रयोग आसानी से हो जाता है, जबकि छोटे खेत में परम्परागत साधनों के द्वारा ही कृषि कार्य किया जाता है। जनपद बिजनौर में 1996 में कुल जोतों की संख्या 283276 थी जो जनसंख्या वृद्धि के कारण 2011 में बढ़कर 317311 हो गयी। यहाँ 0.5 हेक्टेयर से कम जोताकार संख्या 1996 में 123870 थी जो 2011 में बढ़कर 136361 हो गयी अर्थात खेतों का बंटवारा होकर खेत 0.5 हे0 से भी छोटे हो गये। 0.5 से 1.0 हे0 वाली जोताकार संख्या इसी अवधि में 60441 थी जो 2011 में 74486 हो गयी। जोताकार संख्या बढ़ने का क्रम 2.0 से 4.0 हेक्टेयर तक अवाध रूप से जारी है जबकि 4.0 हे0 से अधिक जोतों की संख्या में कमी आई है। क्षेत्र में 10 हे0 व उससे अधिक जोतों को देखें तो यह 1996 के 770 से घटकर 2011 में 536 रह गयी और इस श्रेणी के अन्तर्गत आने वाली जोतों का क्षेत्रफल 18791 से घटकर 10361 हे0 रह गया। जोताकार में निरन्तर कमी आना तथा छोटी जोतों की संख्या में वृद्धि होना निश्चित ही चिन्ता का विषय है। जोताकार छोटे होने के प्रारम्भिक दिनों में कृषि का स्वरूप सघन एवं उत्पादन परक होता है जिसमे मानव श्रम का प्रयोग अधिक होता है किन्तु धीरे–धीरे इसका स्वरूप जीवन निर्वाहक में परिवर्तित हो जाता है और अन्ततोगत्वा कृषक अपनी जोत को परती छोड़ने या बेचने पर विवश हो जाता है। यह दुःश्चक्र अनवरत रूप से तब तक चलता रहता है जब तक कि बड़ी जोताकार वाला अपेक्षाकृत सम्पन्न कृषक छोटी जोत को क्रय कर अपनी जोत में नहीं मिला लेता। परिणामतः छोटी जोत वाले कृषक भूमिहीन होकर सीमान्त कृषक या श्रमिक के रूप में परिवर्तित होने को विवश हो जाते हैं। अपवाद रूप में यह हो सकता है कि छोटी जोत में अपने परिवार के सहयोग से कभी–कभी अधिक उत्पादन प्राप्त कर लिया जाये लेकिन यह उत्पादन परिवार की आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं कर पाता। उत्पादन की दर तो अधिक हो जाती है किन्तु आवश्यकताएँ अधिक होने के कारण उनकी पूर्ति नहीं हो पाती है। छोटी जोत वाले कृषक के पास आर्थिक साधन भी उतने नहीं होते है जितने की बड़ी जोत वाले कृषक के पास होते हैं। बड़ी जोत वाला कृषक यदि अपने खेत में कीटनाशकों का छिड़काव करता है तो कीट समीप के छोटे खेत में आ जाते हैं और कीटनाशकों का असर कम होने तक समीपवर्ती छोटे खेत की फसल को नुकसान पहुँचाकर पुनः बड़े खेत में पहुँचकर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्पूर्ण उत्पादन को प्रभावित करते हैं।

नगरीय क्षेत्रों में जमीन की आसमान छूती कीमतों ने भी जोताकार छोटा करने में सहायता की है। प्रॉपर्टी डीलर नगर के उपान्त क्षेत्र में भूमि स्वामियों को ऊँची कीमतों का प्रलोभन देकर उन्हें बटवारे पर विवश करते हैं। यदि किसी परिवार में दो भाई हैं तो किसी एक को अपने

पक्ष में लेकर उसके हिस्से की भूमि क्रय कर जोताकार छोटा करते हैं और उस पर प्लाट बनाकर महंगे मूल्य पर बेचते हैं। दूसरा भाई जो अपनी भूमि बेचना नहीं चाहता था। जोताकार छोटा होने के कारण उसमें कृषि कार्य ठीक से नहीं कर पाता है और उत्पादन पर प्रभाव पड़ने लगता है अर्थात लागत की तुलना में लाभ कम होने से वह भी कृषि कार्य छोड़कर अपनी भूमि प्रॉपर्टी डीलर को बेच देता है। इन प्लाटों पर नगर के मध्यम आय वर्ग के लोग अपना निवेश कर देते है और यह भूमि कृषि भूमि न रहकर रिहायशी क्षेत्र में परिवर्तित हो जाती है। उपान्त क्षेत्र में सुविधाओं के अभाव के चलते आवास आदि भी नहीं बन पाते और यह भूमि परती हो जाती है। यह स्थिति जनपद के छोटे कस्बों तक में देखी जा सकती है। कृषि जोताकार छोटा करने में निवेशकों की भी बड़ी भूमिका है। जनपद में कृषि जोतों की संख्या की तुलनात्मक स्थिति (1996 से 2011 तक) को तालिका–2 एवं कृषि जोतों के क्षेत्रफल को तालिका–3 में स्पष्ट देखा जा सकता है और जनपद में कृषि भूमि पर दबाव का भी आंकलन सहज ही किया जा सकता है –

तालिका संख्या 2

जनपद बिजनौर में क्रियात्मक जोतों की संख्या की तुलनात्मक स्थिति (1996–2011)

क्र.सं.	विकासखण्ड	0.5 हे0 से कम		0.5 से 1.00 हे0		1.00 से 2.00 हे0		2.00 से 4.00 हे0		4.00 से 10.00 हे0		10 व उससे अधिक		कुल जोतो की सं0	
		1996	2011	1996	2011	1996	2011	1996	2011	1996	2011	1996	2011	1996	2011
1	नजीबाबाद	10473	11483	6927	8173	5101	5917	3436	3776	1567	1446	108	75	27612	30870
2	किरतपुर	7497	8189	3294	3887	2907	3387	2249	2469	810	746	37	26	16794	18704
3	मौ0पुर देवमल	9151	10160	4586	5411	4981	5461	2673	2933	1144	1056	89	63	22624	25084
4	हल्दौर	13800	14630	5030	5935	4507	4947	2902	3202	1282	1179	81	57	27602	29950
5	कोतवाली	14508	17028	7361	8853	5862	7570	3572	3925	1383	1239	150	99	32836	38714
6	अफजलगढ़	10205	11230	6798	8022	5008	5808	3021	3321	1498	1378	99	69	26629	29828
7	नहटौर	8325	9126	4217	4976	3365	3895	2369	2599	417	385	19	13	18712	20994
8	धामपुर	10256	11236	4287	5059	4581	5381	1731	1901	713	657	21	15	21589	24249
9	स्योहारा	12381	13361	5458	6440	4692	5492	2405	2645	682	632	27	19	25645	28589
10	जलीलपुर	9982	10971	5013	5915	5310	6160	3587	3937	1614	1486	68	48	25574	28517
11	नूरपुर	10727	11816	4770	5629	4908	5688	3324	3654	1223	1127	44	31	24996	27945
	योग ग्रामीण	117305	129230	57741	68300	51222	59706	31269	34362	12333	11331	743	515	**270613**	**303444**
	योग नगरीय	**6565**	7131	**2700**	**3186**	**1907**	**1987**	**1132**	**1232**	**335**	**310**	**27**	**21**	12666	13867
	योग जनपद	**123870**	**136361**	**60441**	**74486**	**53129**	**61693**	**32401**	**35594**	**12668**	**11641**	**770**	**536**	**283276**	**317311**

स्रोत– 1. निदेशक सांख्यिकीय निदेशालय, उ0प्र0 शासन, लखनऊ।

2. जिला सांख्याधिकारी कार्यालय, जनपद बिजनौर, रामपुर, मुरादाबाद व जे0पी0 नगर।

तालिका संख्या 3

बिजनौर जनपद में क्रियात्मक जोतों के क्षेत्रफल की तुलनात्मक स्थिति (1996–2011)

क्र.सं.	विकासखण्ड	0.5 हे0 से कम		0.5 से 1.00 हे0		1.00 से 2.00 हे0		2.00 से 4.00 हे0		4.00 से 10.00 हे0		10 व उससे अधिक		कुल जोतो की सं0	
		1996	2011	1996	2011	1996	2011	1996	2011	1996	2011	1996	2011	1996	2011
1	नजीबाबाद	3813	2910	5037	5587	7167	8170	9511	10082	8702	7832	2975	2082	37205	36693
2	किरतपुर	2531	2029	2220	2460	4207	4796	6047	6410	4491	4042	445	334	19941	20071
3	मौ0पुर देवमल	2964	2363	3390	3720	8034	9159	7704	8193	6701	6031	1433	1003	30226	30469
4	हल्दौर	4078	3166	3599	3934	6357	7247	8153	8642	7224	6504	1296	958	30707	30451
5	कोतवाली	6641	3550	6335	7381	8258	9398	9463	10054	7411	6671	2444	1712	40552	383766
6	अफजलगढ़	4720	3920	5135	5685	6920	7889	8636	9154	7576	6821	3142	2204	36129	35673
7	नहटौर	2251	1861	3157	3487	4767	5432	6612	7009	2302	2072	311	218	19400	20079
8	धामपुर	3950	3090	3562	3892	7284	8303	5013	5416	3710	3340	333	235	23852	24276
9	स्योहारा	4672	3530	4314	4754	7258	8274	6864	7276	3615	3255	358	253	27081	27342
10	जलीलपुर	3404	2830	3561	3891	7518	8571	10314	10936	8867	8341	929	572	34596	35141
11	नूरपुर	4643	3932	3328	3658	6951	7924	9917	10512	6586	5931	670	470	32095	
	योग ग्रामीण	43667	33181	43638	48449	74721	85163	88237	93684	67185	60840	14336	10041	331784	331358
	योग नगरीय	1672	1360	2397	2547	2864	2984	3488	3673	1860	1680	455	320	12736	12564
	योग जनपद	45339	34541	46035	50996	77585	88147	91725	97357	69045	62520	18791	10361	344520	343922

स्रोत– 1. निदेशक सांख्यिकीय निदेशालय, उ0प्र0 शासन, लखनऊ।

2. जिला सांख्यिकीय कार्यालय, जनपद बिजनौर, रामपुर, मुरादाबाद व जे0पी0 नगर।

उक्त तालिकाओं के विश्लेषण के उपरान्त यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जनपद में जनसंख्या में वृद्धि के साथ जोतों के आकार में निरन्तर कमी आ रही है जिससे उत्पादन में भी गिरावट देखने को मिल रही है। इसका प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों से जनसंख्या का नगरों की ओर पलायन के रूप में परिलक्षित होता है और नगर भी समस्याओं के केन्द्र बन रहे हैं। समय रहते यदि समस्या पर विचार नहीं किया गया तो एक समस्या दूसरी समस्या को जन्म देगी। जोताकार छोटी होने से कृषि भविष्य में लाभ का व्यवसाय तो दूर जीवन निर्वाहक भी नहीं रह पायेगी और जनसंख्या का बड़ा वर्ग बेरोजगारी की चपेट में आ जायेगा। इसलिए जनसंख्या को सीमित करने के उपाय, सहकारी कृषि प्रणाली अपनाने पर जोर तथा एकाकी परिवारों के स्थान पर सामूहिक परिवारों की संकल्पना को साकार करना अधिक श्रेष्ठ एवं उपयुक्त होगा। क्षेत्रीय संदर्भ में कृषि पर निर्भरता कम करने के लिए अर्थव्यवस्था के द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र को भी विकसित करना होगा तभी इस उपजाऊ क्षेत्र की उत्पादकता एवं पारिस्थितिकी को बचाया जा सकता है।

संदर्भ

1. Stamp. L.D., Asia-A Regional and Economic Georaphy', London 1967, Page No. 274.
2. Chaudhary, M.P.S. Rai ,'Land and Soil' National Book Trust, New Delhi 1966, Page No. 05.
3. जिला सूचना डायरी ,जनपद बिजनौर।
4 गजेटियर ,जनपद बिजनौर 1971, पृ0सं0 15
5 चाँदना, आर0सी0, जनसंख्या भूगोल द्वितीय संस्करण (1999) पृ0 85
6. Triwartha, G.T., 'A Geography of Population' world Pattern, John valley, Newyork Page No. 87.
7. Census of India, Series-1, (1981) Page No. 23
8. सिंह, ब्रजभूषण, 'कृषि भूगोल', 1988, पृ0सं0 43
9. Buchaman, R.O., Some Reflections on Agriculture Geography, Page No. 41
10. शर्मा, बी.ए.ल, कृषि भूगोल, 1990, पृ0सं0 205